



जून 2019

वर्ष : 2 अंक :9

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर



निदेशक की कलम से



आप सभी को संस्थान की सभी मासिक गतिविधियों से अवगत करवाने के लिए हम पुनः सिफरी मासिक समाचार पत्रिका का यह अंक आपके लिए लेकर आए है। यह माह कुछ अच्छी गतिविधियों और कुछ प्राकृतिक आपदाओं का गवाह बना है। जैसा की आप को विदित है की हाल ही में 'फनी' चक्रवात ने देश के कुछ हिस्सों में उत्पात मचाया जिससे ओडिशा, पश्चिम बंगाल

आदि के तटवर्ती इलाकों को भारी नुकसान का सामना करना पड़ा। जिससे जान माल की बहुत हानि हुई है। हमारे संस्थान के सभी कर्मचारियों ने मिलकर इन प्रभावित इलाकों के नागरिकों के लिए उचित सहायता राशि और सामान की व्यवस्था की और संस्थान की एक टीम ने प्रभावित इलाकों में जाकर इसका वितरण किया। यह संस्थान जलीय पारिस्थिकी में हुए बदलाव या हानि का भी परीक्षण कर रहा है। हमारा निरंतर प्रयास रहता है कि इस प्रकार कि प्राकृतिक आपदाओं के आने से हमारे वैज्ञानिक मत्स्य कृषकों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर हमेशा खड़े रहे और वैज्ञानिक तरीकों से किसी भी प्रकार की विषम जलीय परिस्थिति को संभाला जा सके। इसके आलावा हिल्सा मात्स्यिकी के विकास के लिए हमारा संस्थान हमेशा कार्यरत रहता है। इसी उपलक्ष में संस्थान ने एक विचार मंथन का आयोजन किया ताकि हिल्सा मात्स्यिकी को बढ़ावा मिले और इसके पालन की नयी तकनीकों का विकास किया जा सके। इसी दौरान संस्थान में विश्वकवि श्री रविंद्र नाथ टैगोर की जन्मशती मनाई गयी और श्रद्धासुमन अर्पित करके संस्थान के सभी कर्मचारियों ने उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की। इस सब के अलावा संस्थान कृषकों और छात्रों से जुड़ने के अपने सभी प्रयासों में इस माह भी सफल रहा और उनके तत्पर विकास के लिए प्रयासरत रहा। इस अंक के द्वारा हम आपके समक्ष संस्थान की कार्य प्रगति प्रस्तुत कर रहे है। हम आशा करते है कि आपको इस अंक के द्वारा संस्थान में हो रही मात्स्यिकी विकास का झलकियों द्वारा अवलोकन हो सके। इसी विचार के साथ आप सभी का मैं धन्यवाद करता हूँ।



विक्रम

मुख्य शोध उपलब्धियाँ

- संस्थान ने जैविक प्रमाणिकता सूचकांक (बैथिक इंडेक्स ऑफ बायोटिक इंटीग्रिटी; बी-आईबीआई) के माध्यम से चलियार नदी में उपस्थित मैक्रोबैथिक जीवों की बहुतायत का अध्ययन किया जिससे इस नदी की पारिस्थितिकी और स्वास्थ्य का आंकलन किया जा सके। इस नदी के 6 अलवणीय जल वाले स्टेशनों में किए गए सर्वेक्षण यह बताते हैं कि नीलाम्बुर में सबसे कम बी.एम.डब्ल्यू.पी. स्कोर (100) पाया गया जबकि उच्चतम स्कोर एडवात्रा और एरियाकोड (क्रमशः 184 और 173) दर्ज किया गया। बी.एम.डब्ल्यू.पी. के उच्चतम स्कोर यह इंगित करते हैं कि यहाँ की पारिस्थितिकी उत्तम है। नीलाम्बुर में बैथोस की संख्या कम पायी गयी क्योंकि इसकी मिट्टी रेतीली तथा इसमें पत्थरों की मात्रा अधिक पायी गयी है।
- संस्थान ने मानसून पूर्व काठजोड़ी के जल नमूनों का विश्लेषण किया जो यह दिखाता है कि इस जल में पीएच की मात्रा अधिक है। नवराज के ऊपरी स्थान में पीएच की मात्रा 9 से अधिक तथा जल की पारदर्शिता 213 सेंटीमीटर पायी गयी। इस नदी के 3 दिनों के सर्वेक्षण से इसका बी.ओ.डी. क्रमशः 0.8 और 1.1 पीपीएम पाया गया।
- ताप्ति नदी के सर्वेक्षण में 17 फैमिली की 58 मत्स्य प्रजातियाँ पायी गयीं जो अधिकतर साइप्रिनिडा, बाग्रीडा, चानीडा, मास्टासेमबेलिडा वर्ग से थी। मुल्ताई और भुसावल में विदेशी प्रजाति, ओरिओक्रोमिस मोसम्बिकस और ओरिओक्रोमिस नाइलोटिकस क्रमशः 67 प्रतिशत और 8 प्रतिशत पाये गए।
- नासिक के गंगापुर बांध में 600 से 700 क्यूसेक जल प्रवाह होने के कारण पिछले वर्ष की तुलना में, इस वर्ष मानसून से पहले नासिक क्षेत्र स्थित गोदावरी नदी की जल गुणवत्ता में बहुत अधिक सुधार देखा गया। वर्तमान में इस नदी की पारिस्थितिकी जलीय जीवों के लिए अत्यंत उपकारी है।
- अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के बारतांग स्थित दलदली और ज्वालामुखी मिट्टी के नमूनों से 16एस सीकेंसिंग द्वारा 30 जीवाणुओं को पृथक कर इनकी पहचान की गयी है। इन सूचनाओं को राष्ट्रीय जैवसूचना केंद्र में जमा कर पंजीकरण संख्या प्राप्त कर ली गयी है।
- हारंगी नदी में संस्थान द्वारा किए गए सर्वेक्षण यह बताते हैं कि इसके जल के भौतिक-रसायनिक गुण, मात्स्यिकी संवर्धन के लिए उपयुक्त हैं और बेहतर प्रबंधन तरीकों से इसकी उत्पादकता में ओर भी उन्नति और वृद्धि कि जा सकती है।

- तेलंगाना के पलार जलाशय में संस्थान द्वारा विकसित सिफरी जी आई केज मॉडल संरचनाओं में परीक्षण हेतु जयंती रोहू (लेबीओ रोहिता) की अंगुलिकाओं (लगभग 20 अंगुलिका प्रति वर्गमीटर की दर) का संचयन किया गया। कुल 8 महीनों के बाद इनका वजन 840.0 ग्राम हो गया जो आरंभ में 45.5 ग्राम था।
- गंगा नदी बेसिन क्षेत्र कि कुछ कैटफिश जैसे मिस्टस टेंगरा, मिस्टस कैवेसियस और यूट्रोपिकथिस वाचा के प्रजनन चक्र पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन से यह पता चलता है कि मिस्टस टेंगरा और मिस्टस कैवेसियस के गोनाड की परिपक्वता और प्रजनन पर वर्षापात में परिवर्तन और जल के तापमान में वृद्धि से गहरा प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार यूट्रोपिकथिस वाचा के प्रजनन पर स्थलीय तापमान में परिवर्तन के कारण अलग-अलग प्रभाव देखने को मिल रहे हैं।
- पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद और मालदा जिलों के 15 आर्द्रक्षेत्रों का आंकलन किया गया जिससे पारंपरिक तकनीकों द्वारा इसके प्रबंधन के तरीकों को जाना जा सके। इसमें यह देखा गया है कि मुर्शिदाबाद जिले में स्वदेशी तकनीकी ज्ञान मालदा जिले कि तुलना में अधिक कारगर और उन्नत है। इस आंकलन से अंतर्स्थलीय मत्स्य विविधता में ह्रास के कारणों का भी पता लगाया गया जो मुर्शिदाबाद जिले में 30 प्रतिशत और मालदा जिले में 38.5 प्रतिशत दर्ज किया गया।
- असम के अलग-अलग आर्द्रक्षेत्रों में कार्बन सिकवेस्ट्रेशन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया - 47 मोरकोलॉंग बील (मोरिगाँव जिला), उरमल और चतला बील (कामाख्या जिला)। इस अध्ययन से यह पता चला कि चतला बील में कार्बनिक तत्व का जमाव (~47), मोरकोलॉंग बील और उरमल बील से अधिक है। लगभग सभी बीलों में कार्बनिक तत्व का जमाव उनके ऊपरी क्षेत्रों से अधिक पाया गया।
- मछलियों में बीमारी का प्रकोप तथा उनके स्वास्थ्य आंकलन के लिए पश्चिम बंगाल में तीस्ता नदी, पूर्वी कोलकाता आर्द्रक्षेत्र (ईस्ट कोलकाता वेटलैण्ड), मेचेदा, पश्चिम मिदनापुर आदि क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया गया।
- मार्च 2019 में संचयन के दौरान प्रवाहित की गयी हिल्सा मछलियों को भागलपुर और पटना में गंगा नदी से पकड़ा गया जो इसकी अभिगमन प्रकृति को दिखाता है।
- संस्थान ने गंगा नदी से लेबीओ कलबासु और सिरहीनस मृगला के जंगली व्यस्क नर मछलियों को संग्रहीत किया जिससे इनके मूलस्थान में ही इनका प्रजनन हो सके तथा गंगा नदी के क्षीण हो चुके जल क्षेत्रों में फिर इनको संचयन किया जा सके।

जन जातीय उपयोजना के तहत "मत्स्य पालन के माध्यम से आजीविका में सुधार" पर प्रशिक्षण-सह-जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी द्वारा मत्स्य विभाग, असम, के सहयोग से 'मत्स्य पालन के माध्यम से आजीविका में सुधार' पर जनजातीय उपयोजना के तहत 4 मई, 2019 को, बक्सा जिले के मुक्सलपुर के आदिवासी मछुआरों के लिए एक प्रशिक्षण-सह-जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण-सह-जागरूकता कार्यक्रम, संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया था। डॉ. बी. के. भट्टाचार्य, प्रमुख (कार्यवाहक), क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी



और डॉ. पी. के. परीडा, समन्वयक, जनजातीय उपयोजना कार्यक्रम, में शामिल थे। कार्यक्रम में मछली पालन के माध्यम से बक्सा के आदिवासी मछुआरों की आजीविका में सुधार लाने के उद्देश्य से, आदिवासी मछुआरों को, संस्थान द्वारा प्रस्तुत केज ग्रो फीड भी वितरित



किया गया, ताकि उन्हें पर्यावरण सुरक्षित मत्स्य पालन करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।

बैठक की अध्यक्षता श्री बिपुल खटियार, मत्स्य विकास अधिकारी, बक्सा जिला, ने की। उन्होंने सभी आमंत्रितों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि बक्सा जिले (बोरो जनजाति) के आदिवासी मछुआरे धीरे-धीरे वैज्ञानिक तरीके से मछली पालन कर रहे हैं। डॉ. दीपेश देबनाथ, वरिष्ठ वैज्ञानिक, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी, ने

मत्स्य पालन में मछली खाद्य के महत्व पर चर्चा की और बेहतर मछली उत्पादन के लिए उचित खाद्य आवृत्ति, खाद्य राशन और खिलाने के तरीकों पर तकनीकी ज्ञान साझा किया। संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के वैज्ञानिक डॉ. प्रोनोब दास, ने अपने व्याख्यान में मछुआरों



से आजीविका या आय सृजन के साधन के रूप में मछली पालन को अपनाने का आग्रह किया और मछली स्वास्थ्य प्रबंधन पर अपने ज्ञान को साझा किया। संस्थान के श्री सीमांकु बोराह, वैज्ञानिक, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी, ने कार्यक्रम की पृष्ठभूमि और उद्देश्य के बारे में बताया, इसके अलावा, जल-प्रपात में भी वैज्ञानिक मछली पालन पद्धति पर अपने अनुभव और ज्ञान को साझा किया। श्री अमूल्य ककाटी, वरिष्ठ तकनीकी सहायक, क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी, ने किसानों से आग्रह किया कि वे हर सुबह अपने जलीय क्षेत्रों का दौरा करें ताकि उन्हें संचयन की गई मछलियों की स्थिति का पता चले। उन्होंने बच्चों, गर्भवती महिलाओं और वयस्कों के लिए मछली खाने के लाभों पर भी जोर दिया। कुल 66 आदिवासी मछुआरों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया और संस्थान के वैज्ञानिकों और असम मत्स्य विभाग के अधिकारियों के साथ बातचीत की। इस बैठक में श्री अभिजीत चौधरी, मत्स्य विकास अधिकारी, बक्सा जिला, भी उपस्थित थे।

पहाड़ी क्षेत्र में मत्स्य विकास पर जागरूकता कार्यक्रम

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, ने 11 और 12 मई 2019 के दौरान पश्चिम बंगाल के पर्वतीय क्षेत्र मिरिक, दार्जिलिंग, पहाड़ी क्षेत्र में मछली पालन और मत्स्य विकास से जुड़े आजीविका के विभिन्न पहलुओं को लेकर दो जागरूकता कार्यक्रम



आयोजित किये। प्रत्येक कार्यक्रम में 200 से अधिक मछुआरों ने भाग लिया और कुल 400 मछुआरों को इस कार्यक्रम के माध्यम से संवेदनशील बनाया गया। मंजू चाय एस्टेट, मिरिक (सौरी बस्ती, मंजू दरगाँव, देसितार, साडू गाँव, बैरी गाँव और लेचा विला) के आसपास के छह गाँवों के ग्रामीणों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने सभा को संबोधित किया और इस क्षेत्र में मछली पालन और आजीविका की विभिन्न संभावनाओं पर उन्हें



संवेदनशील बनाया। उन्होंने मछुआरों, युवाओं और महिलाओं के साथ आजीविका विकास के लिए अनुसूचित जन जातीय उपयोजना और जनजातीय उपयोजना के तहत संस्थान की गतिविधियों को भी साझा किया। मछुआरों ने अपनी अनेक समस्याओं जैसे छोटी भूमि जोतने की, मछली के बीज की अनुपलब्धता और मछली की बीमारी को संस्थान के निदेशक के साथ साझा किया। निदेशक ने उन्हें विस्तार से समझाया कि छोटी भूमि जोतने और ठंडे जल के क्षेत्र में मत्स्य प्रजातियों का पालन किया जा सकता है; स्थानीय क्षेत्र, बीज की उपलब्धता और रोग से बचने के संभावित उपायों के बारे में भी बताया। उन्होंने किसानों के जलीय क्षेत्र का भी दौरा किया और



किसानों को बेहतर खेती के लिए सलाह दी। दूसरे दिन सजावटी मछली की खेती और उपलब्ध स्थानीय सजावटी मछलियों के संरक्षण पर ध्यान दिया गया। पहाड़ी क्षेत्र में सजावटी मछली पालन के क्षेत्र पर डॉ. पी. के. परीदा द्वारा एक विस्तृत प्रस्तुति दी गई। प्रस्तुति के बाद किसानों ने अपने प्रश्न उठाये और संस्थान के निदेशक के साथ अपने क्षेत्र में छोटी भूमि में सजावटी मछली पालन की संभावनाओं पर बातचीत की। इस कार्यक्रम का आयोजन सामुदायिक भवन, मंजू चाय

एस्टेट में किया गया और मंजू चाय एस्टेट के अधिकारी भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। यह कार्यक्रम "सुंदरबन ड्रीम्स", नामक एक स्थानीय गैर सरकारी संस्थान (एन.जी.ओ.), के समन्वय में आयोजित किया गया था।

जनजातीय उपयोजना के तहत 'मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए एक्वाफीड का उपयोग' पर प्रशिक्षण-सह-जागरूकता कार्यक्रम



भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी द्वारा रबर बोर्ड, जोनल ऑफिस, गुवाहाटी के साथ मिलकर असम के दारागिरी, गोलपारा जिले, में 10 मई 2019 को 'मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए एक्वाफीड का उपयोग' विषय पर प्रशिक्षण-सह-जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इस जनजातीय उपयोजना कार्यक्रम का आयोजन डॉ. बि. के. दास, संस्थान के निदेशक; डॉ. बि. के. भट्टाचार्य, प्रभारी अधिकारी, संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी; और डॉ. पी. के. परीदा, वैज्ञानिक और समन्वयक, जनजातीय उपयोजना कार्यक्रम, मुख्यालय बैरकपुर और श्री सिमांकु बोरा, वैज्ञानिक, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी, के समग्र मार्गदर्शन और



सहायता के साथ किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छोटे तालाबों में वैज्ञानिक तरीके से मछली उत्पादन करके अतिरिक्त आय सृजन पैदा करने के साथ साथ रबर उत्पादकों के बीच इस विषय पर जागरूकता पैदा करना भी था।

प्रशिक्षण-सह-जागरूकता कार्यक्रम का उद्घाटन श्री एस. सेल्वराज, अतिरिक्त रबर उत्पादन आयुक्त, रबर बोर्ड, जोनल कार्यालय, गुवाहाटी द्वारा किया गया, जिन्होंने बताया कि खड़ उत्पादकों के लिए अतिरिक्त आय सृजन आज के समय की आवश्यकता है और इस उद्देश्य कि पूर्ति के लिए, खड़ बोर्ड और यह संस्थान मिलकर मत्स्य पालन और जलीय कृषि पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। उन्होंने प्रतिभागियों से संस्थान के मत्स्य वैज्ञानिकों से तकनीकी ज्ञान प्राप्त करके अत्यधिक लाभ उठाने का आग्रह किया। डॉ. सोना येंगकोपकम, वरिष्ठ वैज्ञानिक, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने प्रतिभागियों (कुल 25 न.) का स्वागत करते हुए विभिन्न एकीकृत कृषि प्रणालियों की व्याख्या की, जो किसानों के लिए अतिरिक्त आय सृजन का एक माध्यम बन सकती है और उसमें मछली पालन का अभ्यास किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि संस्थान के जनजातीय उप-योजना कार्यक्रम के अंतर्गत, इस संस्थान के गुवाहाटी



केंद्र ने आदिवासी किसानों के लाभ के लिए अतीत में भी कई प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए हैं। डॉ. दीपेश देबनाथ, वरिष्ठ वैज्ञानिक, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी, ने तालाब की तैयारी, किसानों के साथ मत्स्य बीज, मत्स्य खाना और मत्स्य स्वास्थ्य सम्बंधित प्रबंधन तकनीकों के बारे में चर्चा की और इस योजना से फायदे हासिल करने के लिए, मत्स्य पालन को गंभीरता से लेने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि अगर कृषि प्रबंधन प्रणाली का बेहतर तरीके से अपनाया जाता है, तो मछली पालन को कृषि प्रणालियों में सबसे अधिक आर्थिक विकास सम्पन्न माना जा सकता है। इस अवसर पर संस्थान ने मात्स्यिकी के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए प्रतिभागियों को पोषणपूर्ण और संतुलित तैरने वाले मत्स्य खाद्य (फ्लोटिंग फिश फीड; 25 बैग जिसमें ~35 किलोग्राम/बैग की दर रखी गयी) वितरित किये जिससे उन्हें प्रोत्साहन और इस योजना से अधिकतम लाभ मिले। श्रीमती अंसम्मा जॉर्ज, ए.डी.ओ.; श्री राजीव बासुमतारी, ए.फ.ओ.; हेमंत दत्ता, ए.फ.ए.; पालेंद्र, के.; और रबर बोर्ड के अन्य अधिकारियों ने कार्यक्रम को सफलतापूर्वक आयोजित करने में सहायता की।

बारूआ नहर, शिवपुर, फरजुनगंज, सुंदरवन (पश्चिम बंगाल) से मछली संग्रहण

7-8 मई 2019 के दौरान सुंदरवन (पश्चिम बंगाल) के पार्टिशन एक्वाकल्चर सिस्टम (पी.ए.एस.), बरूआ नहर, से मात्स्यिकी द्वारा एक

जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। हाल ही में चक्रवात "फनी"



ने इस प्रणाली को नुकसान पहुंचाया है, जिसके बावजूद उस दिन इस संस्थान के एक दल ने कुल 150 किलोग्राम तक की मछली का प्रग्रहण



किया। जिससे नहरों में मछली पालन को प्रोत्साहित किया गया है। छह महीने के पालन के बाद, कतला, रोहू और मृगल का अधिकतम आकार क्रमशः 1.2 किलोग्राम, 1.0 किलोग्राम और 0.8 किलोग्राम तक रहा। इसमें नहर की देसी मछलियों और मीठे जल के झींगों का भी अच्छा



योगदान था। इस परियोजना दल के सदस्य डॉ. अर्चना सिन्हा, प्रधान वैज्ञानिक; श्री प्रणव गोगोई, वैज्ञानिक; श्री तासो तयांग, वैज्ञानिक और श्री अरुणव मित्रा, तकनीकी अधिकारी थे।

गंगा नदी क्षेत्र की हिस्सा के सामाजिक कार्यान्वयन और मत्स्य पालन पर एक विचार मंथन सत्र का आयोजन



भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, एक प्रमुख शोध संस्थान है, जो जागरूकता, प्रशिक्षण, शिक्षा और विस्तार की गतिविधियों के माध्यम से अंतर्स्थलीय खुले जल संसाधनों, जलीय पारिस्थितिकी प्रणालियों, और मछुआरा समुदाय की आजीविका सुरक्षा के सतत प्रबंधन पर अनुसंधान कार्य के लिए समर्पित है। वर्षों से संस्थान ने हिस्सा के कई पहलुओं पर काम किया है, जो न केवल बंगाली भोजन का विशिष्ट भाग हैं, बल्कि पश्चिम बंगाल राज्य के महत्वपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक और भावनात्मक मूल्यों से भी जुड़ा हुआ है। राज्य में मछुआरों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हिस्सा मत्स्य पर निर्भरशील है। लेकिन कई कारणों से हिस्सा की उपलब्धता दिन-प्रतिदिन कम होती जा रही है और उसके संरक्षण के



लिए शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं की चिंता बढ़ रही है। इस विषय पर एक बहु-हितधारक चर्चा मंच की आवश्यकता को महसूस करते हुए, संस्थान ने "हिस्सा के विशेष संदर्भ में गंगा नदी के सामाजिक कार्यान्वयन और मत्स्य पालन" विषय पर विचार मंथन सत्र की व्यवस्था की। इस क्षेत्र में काम करने वाले विशेषज्ञों के अलावा, कई मछुआरों और काकद्वीप, दीघा और गोडाखाली के मछुआरों के संगठनों के प्रतिनिधियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम को दो सत्रों में विभाजित किया गया था। उद्घाटन सत्र की शुरुआत में, संस्थान के निदेशक, डॉ. बि. के. दास ने गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और इस विचार, मंथन सत्र के उद्देश्य के बारे में जानकारी दी और सभी से सक्रिय रूप में अपने विचार, प्रस्तुत करने का अनुरोध किया। प्रो. बी. एन. पांडे, कार्यकारी अध्यक्ष, जूलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया (जेड.एस.आई.); मगध विश्वविद्यालय, बोधगया के पूर्व प्रोफेसर और प्रमुख (प्राणीविज्ञान) और डीन, ने हिस्सा की उपलब्धता और उसके संरक्षण पर नीतिगत हस्तक्षेप और स्वदेशी प्रभाव का आकलन, गंगा नदी में कलबासु, मृगल और जयंती रोहू की वर्तमान स्थिति आदि विषयों पर विशेष रूप से चर्चा की। प्रो. पी. एन. पांडे, अध्यक्ष, जूलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया (जेड.एस.आई.) और प्राणी विज्ञान संस्थान, रांची विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर, ने अपनी टिपण्णी में हिस्सा संरक्षण पर नीतिगत हस्तक्षेप और स्वदेशी प्रभाव मूल्यांकन पर जोर दिया। प्रोफेसर अमलेश चौधरी, कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्राणीविज्ञान के पूर्व प्रोफेसर, ने हुगली के मुहाने और देश के अन्य हिस्सों में हिस्सा के इतिहास को विस्तार से बताया जिसमें इसके प्रवासी और प्रजनन तरीके भी शामिल थे। उन्होंने मछली पकड़ने की पद्धति, मछली की जनसंख्या, मछुआरों की आजीविका और अर्थशास्त्र में बदलाव पर भी बात की। डॉ. दिलीप कुमार, मत्स्य पालन, मत्स्य और ग्रामीण विकास सलाहकार,

भारत सरकार, और पूर्व निदेशक, भाकृअनुस-केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई ने दर्शकों को संबोधित करते हुए, हिल्सा के कृत्रिम प्रजनन, पालन और संरक्षण उपायों को लागू करने में नीति निर्माताओं की भूमिका पर जोर दिया। सहभागी सत्र की शुरुआत हिल्सा के विशेष संदर्भ के साथ भाकृअनुस-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, और नमामि गंगे परियोजना (एन.एम.सी.जी. परियोजना) की उपलब्धियों पर संस्थान के निदेशक डॉ. वि. के. दास की विस्तृत प्रस्तुति के साथ हुआ। उन्होंने फरका बैराज पर हिल्सा मछली के संचयन कार्यक्रमों पर बात की और हिल्सा के वर्चस्व और प्रजनन पर शोध की आवश्यकता पर चर्चा की। उन्होंने फरका बैराज में हिल्सा पकड के आंकड़े, गंगा नदी में भारी धातु सांद्रता, ज्वारझुख खिंचाव, नई मछली प्रजातियों का पाया जाना, मछुआरों का संवेदनशील सामाजिक-अर्थशास्त्र, जो कि अधिक मत्स्य पकड और प्रतिबंध की अवधि के दौरान होता है, के विषय में अपने विचार रखे। अंत में उन्होंने सभी को इस बात से अवगत करवाया की यह संस्थान मई के महीने में हिल्सा अनुसंधान और विकासात्मक गतिविधियों को प्राथमिकता देगा और समर्पित रूप से अनुसंधान कार्य करेगा। इसके बाद एक विचार विमर्श सभा में संस्थान के पूर्व प्रधान वैज्ञानिक; डॉ. बी.सी. झा, प्रो. असीम नाथ, प्रोफेसर, सिद्धो-कान्हो-बिरसा विश्वविद्यालय, पुरुलिया; डॉ. डी. एन. चट्टोपाध्याय, प्रमुख वैज्ञानिक, भाकृअनुस-केन्द्रीय मीठाजल अनुसंधान संस्थान, राहारा केंद्र; डॉ. जी. एच. पेलन, प्रभारी, भाकृअनुस-केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, कोलकाता केंद्र; बैरकपुर संस्थान से विभिन्न विभागाध्यक्ष, जैसे प्रख्यात विशेषज्ञ शामिल हुए। श्री श्याम सुंदर दास, एफ.एफ.टी.ए., दीघा; श्री सत्यनाथ पात्रा और श्री सुभास सरकार, काकद्वीप; श्री पूर्णो पात्रा, गोडाखली; और हिल्सा संरक्षण पर मछुआरों की धारणा का प्रतिनिधित्व करने के लिए हिल्सा से सम्बंधित अन्य मछुआरे भी उपस्थित थे। उन्होंने औद्योगिक और कृषि प्रदूषण, मत्स्य प्रतिबंध की अवधि के विस्तार और कठोर कानून की आवश्यकता, नीतिकार्यान्वयन के लिए समन्वय और सामूहिक दृष्टिकोण हेतु मछुआरों के सशक्तीकरण, उनकी कई समस्याओं और संभावित समाधानों जैसे कई मुद्दों पर प्रकाश डाला। दिलीप कुमार ने सत्र में संरक्षण कार्यक्रमों के बहु-हितधारक कार्यान्वयन, संचयन की व्यावसायिक व्यवहार्यता, शोध निष्कर्षों की अपसंस्कृति, हिल्सा के पोषण मूल्य, और व्यावसायिक सूचना प्रौद्योगिकी में वैज्ञानिक जानकारी को बदलना आदि विषयों पर चर्चा की। अंत में डॉ. ए. के. सक्सेना, इंडियन साइंस कांग्रेस एसोसिएशन के पूर्व महासचिव और सी.एस.जे.एम. विश्वविद्यालय, कानपुर के पूर्व डीन, ने एक बहु-हितधारक मंचप्रदान करने के लिए संस्थान के प्रयास की सराहना की और कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए निदेशक को बधाई दी। सत्र का समापन डॉ. रंजन कुमार मन्ना, प्रधान वैज्ञानिक और आयोजन सचिव, द्वारा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन से किया गया।



संस्थान में विश्व कवि श्री रविन्द्रनाथ टैगोर की 158वीं जयंती मनाई

नोबेल पुरस्कार विजेता और गीतांजलि के लेखक विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई 1861, को कलकत्ता में श्री देबेन्द्र नाथ टैगोर और सरदा



देवी की जोरासांको हवेली में हुआ था। गुरुदेव ने ने साहित्य के सभी विधाओं में कार्य किया था वह न केवल अपनी कविताओं बल्कि उपन्यास, निबंध, लघु कथाएँ, यात्रा वृत्तांत, नाटक और हजारों गीत लिखे थे। उनके गद्य में, लघु कथाएँ के संख्या सबसे अधिक मानी जाती हैं। उनके कार्यों को अक्सर उनके लयबद्ध, आशावादी और गीतात्मक स्वभाव के लिए जाना जाता है। उनकी कहानियाँ ज्यादातर आम लोगों के जीवन से पर होती। गीतांजलि, चोखेर बाली, पोस्टमॉस्टर, गोरा, कबुलिवाल्लाह, साधना, शेशेर कविता, घरे बाएरे, नष्ट निड आदि प्रमुख कार्य हैं।



हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी भाकृअनुस-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 9 मई, 2019 को रविन्द्रजयंती के रूप में मनाया। कार्यक्रम की मेजबानी संस्थान के रिक्रिएशन क्लब द्वारा की गई थी। डॉ. अपर्णा राँय, वैज्ञानिक, ने विश्वकवि रविन्द्रनाथ टैगोर की 158वीं जयंती के अवसर पर सभी क्रमचारियों को टैगोर और उनके व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों जैसे दार्शनिक, कवि और शिक्षाविद्, के बारे में एक छोटे से परिचय के साथ कार्यक्रम शुरू किया। डॉ. वी. आर. सुरेश संस्थान के कार्यवाहक निदेशक ने अन्य प्रमुख वैज्ञानिकों के साथ बारी बारी से उनके चित्र पर पुष्प और माला अर्पित कर गुरुजी को श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम की शुरुआत श्रीमती केया साहा, मुख्य तकनीकी अधिकारी, द्वारा एक सुंदर रवीन्द्र गीत से की गयी। विभिन्न सदस्यों, कर्मचारियों, और वैज्ञानिकों ने इस दिवस पर अपने विचार प्रस्तुत किये और पूज्य विश्व कवि द्वारा रचित आत्मीय गीतों, लुभावने नाटकों, कृति उपन्यासों, अमर रचनाओं, आदि के बारे में अपने में विचार रखे। कृषि और किसानों की प्रगति के प्रति टैगोर के योगदान और भावनाओं के बारे में भी बात की गई। श्रीमती अभिजीता सेनगुप्ता, सहायक मुख तकनीकी अधिकारी, ने एक समापन गीत गायी। इस कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के रिक्रिएशन क्लब द्वारा निदेशक महोदय के मार्गदर्शन और प्रेरणा से किया गया था।



उपमहानिदेशक (मत्स्य विज्ञान) द्वारा संस्थान के बेंगलूर अनुसंधान केंद्र का दौरा



भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), डॉ. जे. के. जेना ने 20 मई, 2019 को, भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, अनुसंधान केंद्र, बेंगलूर, का दौरा किया। उन्होंने केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र और भाकृअनुप-केंद्रीय मीठाजल अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की। उन्होंने वैज्ञानिकों को कृषि अनुसंधान परिषद कि परम्परागत शैली से काम करने की प्रेरणा दी, साथ ही सामान्य रूप से समाज की और विशेष रूप से मछुआरों की बेहतरी के लिए काम करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने वैज्ञानिकों से आग्रह किया कि वे प्रासंगिक क्षेत्रों में पारदर्शिता हासिल करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लें।

गंगा नदी के मध्य हिस्सों में हिल्सा संरक्षण और सुधार कार्यक्रम

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, ने गंगा नदी के मध्य में, नमामी गंगे (एन.एम.सी.जी.) कार्यक्रम के तहत तीन राज्यों के चुनिंदा जिले जैसे बलिया (उत्तर प्रदेश), बक्सर, पटना और भागलपुर (बिहार), साहेबगंज (झारखंड), और मालदा (पश्चिम बंगाल) के 1,000 से अधिक मछुआरों के लिए “हिल्सा संरक्षण और सुधार” पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। संस्थान की रिपोर्ट के अनुसार 1955



-72 के दौरान, इलाहाबाद में गंगा नदी में, हिल्सा 48.4 टन के औसत के साथ दर्ज कि गयी थी। 1975 में फरक्का बैराज की स्थापना के तुरंत बाद, गंगा नदी के मध्य हिस्सों में हिल्सा की पकड़ में भारी गिरावट देखी गई है, जो यह दर्शाता है कि इसका कारण अन्य कारकों के साथ साथ प्रवासी पथ में अवरोध भी हो सकता है। इस महत्व को महसूस करते हुए, 259 ग्राम कि औसत वजन के साथ कुल 151 हिल्सा मछलियों को फरक्का में हिल्सा संचयन स्टेशन से दिसंबर 2018 से मार्च 2019 के दौरान छोड़ा गया। अप्रैल से मई, 2019 के दौरान फरक्का से बलिया (उ.प्र.) तक गंगा नदी के बीच में जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास के नेतृत्व में गंगा नदी में मछली पकड़ने पर निर्भर मछुआरों और मछली व्यापारियों को

विशेष रूप से हिल्सा, पकड़ने वालों को आपने अनुभव को साझा करने के लिए आमंत्रित किया गया था। दिलचस्प बात यह है कि बलिया, पटना, भागलपुर और साहेबगंज के मछुआरों ने बताया कि पिछले तीन चार दशकों से, उन्होंने कभी हिल्सा नहीं पकड़ी थी, लेकिन जनवरी और मई के पहले सप्ताह में 150 ग्राम से 200 ग्राम तक की हिल्सा को पकड़ने के बाद वे आश्चर्यचकित थे। हिल्सा आबादी को पुनःजीवित और पुनःस्थापना के लिए गंगा नदी के कई मध्य हिस्सों को ओर अधिक जागरूकता कार्यक्रमों के लिए रेखांकित किया गया है।



शोध छात्र-छात्राओं के लिए उन्मुखीकरण प्रशिक्षण का आयोजन

7-13 मई 2019 के दौरान भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, के कृषि विज्ञान स्नातक स्तर के प्रथम वर्षीय छात्रों के लिए 7-दिवसीय उन्मुखीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में अठारह



छात्रों ने हिस्सा लिया है। डॉ. वि. के. दास, संस्थान के निदेशक ने छात्रों का स्वागत करते हुए ग्रामीण भारत के जीवनयापन को सुनिश्चित करने के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य उत्पादन वृद्धि और प्रबंधन के महत्व पर विस्तार से बताया। छात्रों को मत्स्य पालन, और पशुपालन के एकीकरण के बारे में भी बताया गया। डॉ. बी. पी. मोहंती, विभागाध्यक्ष ने अंतर्स्थलीय खुले जल में मत्स्य पालन बढ़ाने के लिए पोषण और सुरक्षा के विकास पर अपनी चिंता व्यक्त की। छोटी स्वदेशी मछली प्रजातियों और उनके पोषण संबंधी पहलुओं को उनके द्वारा विस्तृत रूप से व्याख्या कि गयी। डॉ.यू.के. सरकार, विभागाध्यक्ष ने जलवायु परिवर्तन के महत्व और अंतर्स्थलीय मत्स्य उत्पादन और उत्पादकता पर इसके प्रभाव के बारे में बताया। प्रशिक्षण मॉड्यूल में संस्थान के वैज्ञानिकों के साथ मैदानी जल रसायन विज्ञान, जैव जीवों, विभिन्न मछली प्रजातियों की पहचान, सजावटी मछली पालन के पहलू, मछली रोगों की पहचान सहित क्षेत्रीय प्रदर्शन यात्राओं, फील्ड प्रदर्शनों और इन-हाउस क्लास इंटरैक्शन में खाद्य सामग्री जिसमें एक्सट्रूड पेलेटेड फीड्स, जी.आई.एस. मैपिंग आदि विषय शामिल हैं। विचार विमर्श सत्र में अंतर्स्थलीय खुले जल मात्स्यिकी के मौजूदा पहलुओं और स्थानीय मछुआरों के सामने आने वाली समस्याएं भी शामिल थी। जीआईएस प्लेटफॉर्म के माध्यम से अंतर्स्थलीय जल निकायों के परिसीमन, तलछट जल के लिमोनो-केमिकल, नदियों एवं मछलियों का पारिस्थितिकी तंत्र, जलाशयों और झीलों में मत्स्यपालन की वृद्धि, अंतर्स्थलीय जल में प्रदूषकों, मछली रोगों के नियंत्रण, खुले जल में, शिल्प गियर्स, स्वास्थ्य भोजन के रूप में छोटे स्वदेशी मछलियों का महत्व, खाद्य निर्माण, विपणन



सहित सामाजिक-अर्थशास्त्र, और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए संचार कौशल का विकास, आदि के बारे में छात्रों के ज्ञान को समृद्ध करने के प्रयास किए गए। इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम से भारत की

ग्रामीण अर्थव्यवस्था और स्वास्थ्य पहलुओं के उत्थान की दिशा में ठोस प्रयास के माध्यम से मत्स्य सहित कृषि के सभी पहलुओं के एकीकरण से छात्रों के लिए भविष्य का मार्ग विकसित होने की उम्मीद है।

विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड के छात्रों के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन में प्रशिक्षण कार्यक्रम

विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड के परास्नातक (जीव विज्ञान) के अंतिम वर्ष के छात्रों के लिए भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान में 7-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 37 छात्रों ने भाग लिया, जिनमें से 31 महिला छात्र थीं। यह मत्स्य शिक्षा में महिला सशक्तीकरण के लिए महिलाओं की अधिक भागीदारी की ओर संकेत करता है। संस्थान के निदेशक डॉ. वि. के.



दास ने प्रशिक्षण सत्र में छात्रों का स्वागत करते हुए, ग्रामीण भारत के जीवन और आजीविका को सुनिश्चित करने के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के महत्व पर जोर दिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कई मॉड्यूल जैसे कि ऑन-फील्ड एक्सपोजर विज़िट, फील्ड प्रदर्शन और तलछट और जल रसायन विज्ञान, मछली खाद्य, सजावटी मछली पालन के पहलू, रीसर्कुलेटरी एकाकल्चर सिस्टम (आरएस) आदि पर संस्थान के वैज्ञानिकों के साथ वार्तालाप आदि शामिल थे। संवादात्मक सत्रों में अंतर्स्थलीय खुले जल मत्स्यपालन और स्थानीय मछुआरों के सामने आने वाली समस्याओं के वर्तमान पहलू शामिल थे। मछली रोग, मिट्टी और पानी की गुणवत्ता, सांख्यिकी, प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण आदि जैसे विभिन्न विषयों पर गहन चर्चा की गई। ईस्ट कोलकाता वेटलैंड, सजावटी मछली के बाजार (गलिफ स्ट्रीट, कोलकाता), मथुरा बील और भाकृअनुप-केंद्रीय मीठाजल अनुसंधान केंद्र राहरा और कल्याणी फील्ड स्टेशन आदि में उनके लिए एक्सपोजर यात्राओं की व्यवस्था की गई थी। जीआईएस प्लेटफॉर्म के माध्यम से जल निकायों के परिसीमन में ज्ञान, तलछट और पानी की लिमोनो-रसायन विज्ञान, नदियों और ज्वारनाद पारिस्थितिकी तंत्र की पारिस्थितिकी और मत्स्य पालन, जलाशयों और आर्द्रभूमि में मत्स्यपालन

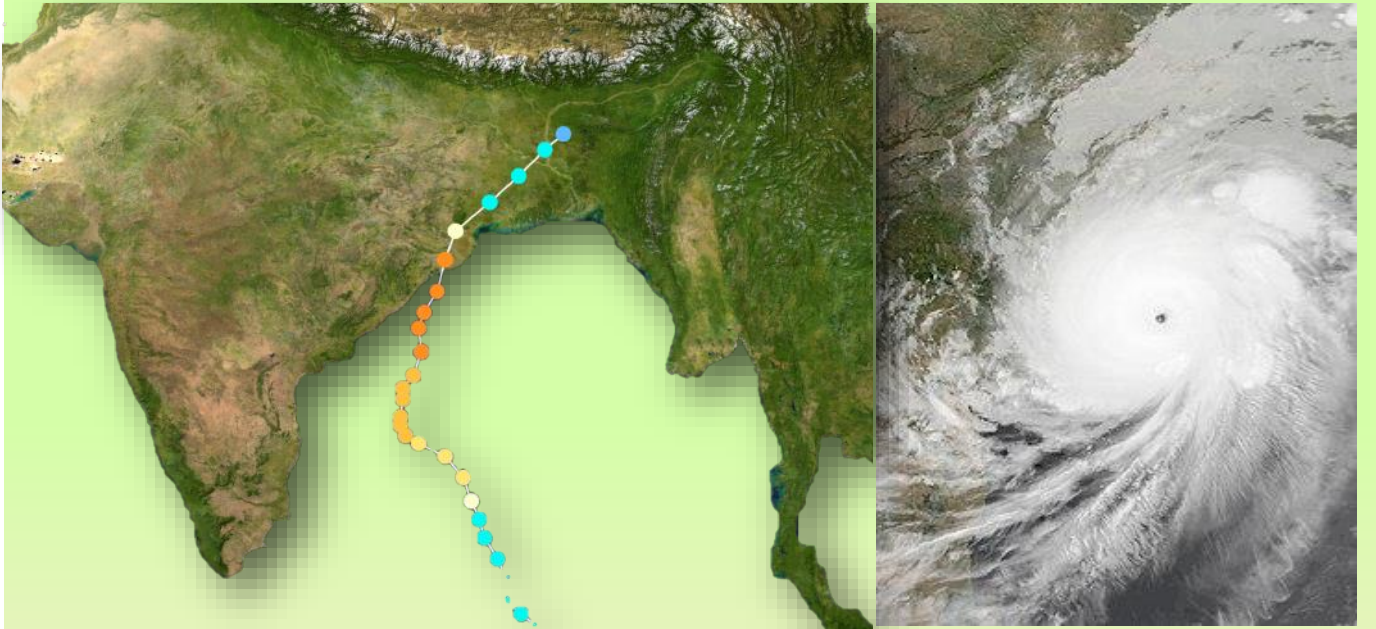


की वृद्धि, जल में प्रदूषकों, मछली रोगों और उनके नियंत्रण खुले जल निकाय, नाव और गियर में, छोटी मछलियों का स्वास्थ्य भोजन में महत्व, चारा निर्माण, विपणन सहित सामाजिक-अर्थशास्त्र आदि में, प्रशिक्षण पूरा होने के बाद बढ़ जाएगा।

प्राकृतिक आपदा फनी में सिफरी परिवार द्वारा सहायता का प्रायस



फनी, 2013 के फालिन के बाद से भारतीय राज्य ओडिशा आने वाला सबसे ताकतवर मजबूत चक्रवात था। उत्तर हिंद महासागर में इस वर्ष का यह पहला गंभीर चक्रवाती तूफान था जो 26 अप्रैल को हिंद महासागर में सुमात्रा के पश्चिम के एक उष्णकटिबंधीय क्षेत्र से उत्पन्न हुआ। 3 मई को फनी चक्रवात ओडिशा के पुरी क्षेत्र के पास 185 किमी / घंटा (115 मील प्रति घंटा) की हवाओं के साथ एक गंभीर चक्रवाती तूफान के रूप में प्रवेश किया, 1999 के ओडिशा चक्रवात के बाद से भारत में आने वाला सबसे तीव्र तूफान बना दिया। भूमि से टकराते वक्त फनी, श्रेणी 4 समकक्ष उष्णकटिबंधीय चक्रवात था लेकिन भूमि से टकराते के बाद इसकी संवहन संरचना को शीघ्रता से नष्ट होती चली गयी; और यह टकराने के तुरंत बाद श्रेणी 1 के चक्रवात के रूप में कमजोर हो गया, इसके बाद फनी लगातार कमजोर होता चला गया और 4 मई को यह कोलकाता के उत्तर से होता हुआ घने अवसाद के रूप में प्रवेश किया और 5 मई को भूटान में जाकर समाप्त हो गया।



भारत सरकार के मौसम विभाग ने फनी तूफान पर लगातार नज़र रखी और जब चक्रवात तेज होना शुरू हुआ, तो भारत के दक्षिण-पूर्वी हिस्से में चेतावनी जारी की गई। तूफान के प्रभाव से निपटने की तैयारी में, ओडिशा राज्य सरकार ने तटीय क्षेत्रों से 12 लाख निवासियों को प्रवासित कर उन्हें ऊँची जगहों पर हजारों निर्मित चक्रवात आश्रयों में स्थानांतरित किया गया। सरकार के इन प्रयासों में हजारों आपातकालीन कर्मचारियों और 43,000 स्वयंसेवकों कि भूमिका भी अहम् थी। संदेश को संप्रेषित करने के लिए टेलीविजन, सायरन और लोक संचार माध्यम का उपयोग



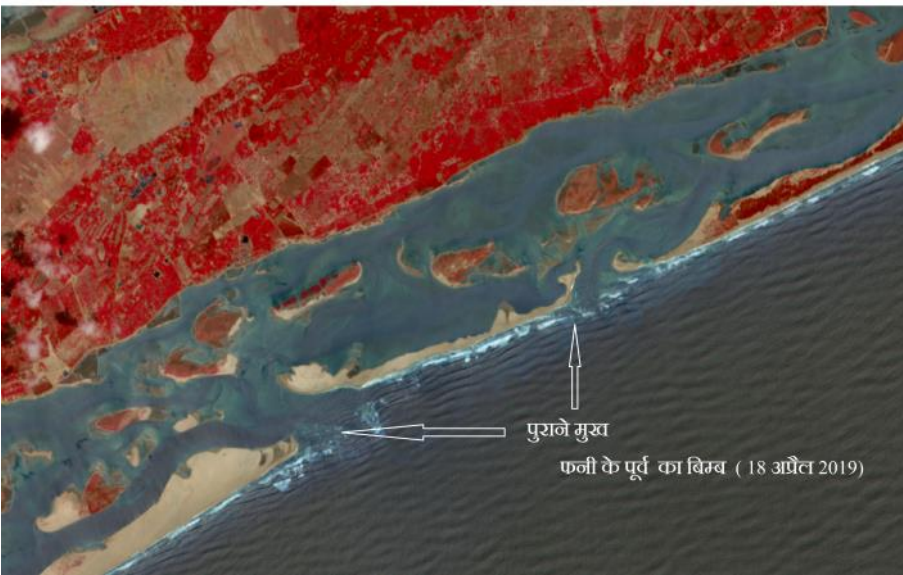
करने के अलावा तूफान की चेतावनी के लिए 26 लाख आपातकालीन संदेशों को भी भेजा गया। इन 9,000 आश्रयों में रहने वोलो के लिए 7,000 रसोईयाँ भी संचालित की गई।

भारतीय नौसेना ने तूफान के बाद की तैयारी और टोही, बचाव और राहत कार्यों में सहायता के लिए अरकोनम और विशाखापत्तनम हवाई अड्डों

पर नौसैनिक जहाजों और विमानों को तैनात किया। ओडिशा सरकार ने 300 यांत्रिक नावों, दो हेलीकॉप्टरों और गिरे हुए पेड़ों को काटने के लिए कई यंत्रीकृत आरियों का भी मंगवाया गया। भारत सरकार एवं ओडिशा सरकार के किये गये प्रयासों से मानव जीवन का काफी कम नुकसान हुआ।

संयुक्त राष्ट्र ने चक्रवात, फनी से निपटने में भारत के प्रदर्शन की काफी प्रशंसा की। 4 मई को जिनेवा में संयुक्त राष्ट्र के समाचार ब्रीफिंग के प्रवक्ता डेनिस मैकक्लेन ने कहा, "भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) की सटीक चेतावनियों से, जन जीवन के लिए निकासी योजना का संचालन जिया गया जिसके परिणामस्वरूप 11 लाख लोगों को मुख्य रूप से सुरक्षित स्थलों पर स्थापित करने में बहुत मदद मिली"।

पुरी जिले के कृष्णाप्रसाद क्षेत्र में चक्रवात फनी की तेज हवाओं के कारण चिलिका झील में चार नए मुख बन गये। चिलिका डेवलपमेंट अथॉरिटी (सीडीए) के एक अधिकारी ने अनुसार सनपाटन और अरखुडा के दो मुंहों के बीच तीन नए मुंह बन गए हैं और झील के उत्तरी हिस्से में एक छोटा सा मुंह पाया गया है। चिलिका में चार नए मुंह के साथ, पानी में खारापन बढ़ गया है जो जलीय जानवरों के एक बड़े समूह के लिए खतरा पैदा कर



सकता है क्योंकि बंगाल की खाड़ी से भारी मात्रा में पानी झील में प्रवेश कर रहा है। संस्थान के भौगोलिक सूचना प्रणाली प्रयोगशाला में सेंटिनल

उपग्रह से प्राप्त सुदूर संवेदी बिम्बों में भी देखा गया कि पुराने दो मुखो के बीच में तीन नए मुख बन गये है जिनके निर्देशांक 1 (19°41' 36.08" उ०; 85° 33' 54.92" पू०), 2 (19°41' 44.08" उ० 85° 34' 16.11" पू०), 3 (19° 41' 47.68" उ० 85° 34' 24.17" पू०) और 4 (19° 42' 3.66" उ० 85° 34' 59.80" पू०) हैं। निदेशक महोदय ने इस जानकारी के प्राप्त होने पर यह निश्चित किया कि संस्थान के तरफ से एक वैज्ञानिक दल जल्द से जल्द पुरी और चिलिका लेक का दौरा करेगा और मत्स्य और मात्स्यिकी पर फनी के प्रभाव का अध्ययन करेगा ।



फनी के तांडव से हुये नुकसान का संचार माध्यमों से जानकारी प्राप्त होने से सभी वैज्ञानिक बहुत व्यथित हो गये और सिफरी मनोरंजन क्लब ने एक सभा का आयोजन करके सर्वसम्मति से यह तय किया कि सिफरी परिवार के सभी सदस्य अपनी इच्छा अनुसार पीड़ितों की मदद करेंगे। सदस्यों ने एक दिन की तनख्वाह मुख्य मंत्री आपदा कोष में दान दी तथा तुरंत नगद पैसे भी इकठ्ठे किये और संस्थान के निदेशक के मार्गदर्शन में 8 मई को एक टीम पुरी के लिए खाना की गयी। 9 मई को पुरी के पिपली गाँव में 300 लोगों के बीच में राहत सामग्री जैसे चुरा, गुड़, बिस्कुट, पानी की बोतल, मच्छरदानी मोमबत्ती, सोलर लालटेन आदि को वितरित किया गया। 10 मई को पुरी तथा कोणार्क में रहत सामग्री का वितरण किया गया। वितरण कार्य में पुरी की स्थानीय पुलिस, स्थानीय नेता एवं रोटरी क्लब के वरिष्ठ सदस्य मौजूद थे। समस्त सिफरी परिवार



ईश्वर से इस त्रासदी से प्रभावित लोगों के स्वस्थ और मंगलमय जीवन की कामना करता है। संस्थान के वैज्ञानिक पूर्व में भी, किसी भी तरह की आपदाओं के आने पर भी अपनी सामर्थ्य के अनुसार पीड़ितों की मदद करता रहा है।

महत्वपूर्ण बैठकें

- संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. ए. के. दास ने नेपाल के पोखरा में दिनांक 17 से 19 अप्रैल 2019 को सार्क के क्षेत्रीय परामर्शी बैठक में फोकल पोइण्ट एक्सपर्ट के तौर पर भाग लिया। इस बैठक का मुख्य विषय था 'मत्स्य पालन के विविधिकरण हेतु जलाशयों, झीलों, नदियों, और समुद्री जल क्षेत्रों में पिंजरे और पेन में मछली पालन'।

बैठकें

- संस्थान में दिनांक 22 से 24 अप्रैल 2019 को आई.एस.ओ. निरीक्षण संपरीक्षा का आयोजन किया गया।
- संस्थान में दिनांक 22 अप्रैल 2019 को ओड़ीशा के सलिया बांध से मछलियों की नमूना एकत्रित और संचयन किया गया।
- संस्थान ने राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, हैदराबाद में दिनांक 24 अप्रैल 2019 को "आर.ए.एस. आधारित गहन अलवणीय तथा समुद्री मत्स्य उत्पादन प्रणालियों का विकास और निर्दिष्ट मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण हेतु जीवंत जीन बैंक" पर आयोजित बैठक में भाग लिया। इस बैठक में राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड द्वारा प्रायोजित वर्ष 2018-19 में प्रशिक्षुओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम की समीक्षा की गयी।
- संस्थान में दिनांक 27 अप्रैल से 1 मई 2019 को राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड द्वारा प्रायोजित "मोतीहारी के मछुआरों के लिए बील क्षेत्र में मात्स्यिकी विकास तथा पेन में मछली पालन" पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया।
- संस्थान में दिनांक 02 मई 2019 को "हिल्सा मात्स्यिकी के परिपेक्ष्य में गंगा नदी बेसिन की मात्स्यिकी का सामाजिक प्रभाव" पर विचार मंथन सत्र आयोजित किया गया।
- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने ब्रिनिहत, मेघालय में जनजाति उप योजना के तहत रबर बोर्ड, गुवाहाटी के साथ "भोई जिले के निष्क्रिय जल निकायों में मात्स्यिकी संवर्धन" पर दिनांक 02 मई 2019 को एक जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया।
- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने बसका जिला, असम में "मात्स्यिकी द्वारा आजीविका उन्नयन" पर दिनांक 04 मई

2019 को एक प्रशिक्षण- सह-जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया।

- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, बेंगलुरु ने दिनांक 08 मई 2019 को तुंगभद्रा बांध, होसपेट, कर्नाटक में तुंगभद्रा बोर्ड की 71वीं मात्स्यिकी विकास समिति 2019-20 की बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने जनजाति उप योजना के तहत रबर बोर्ड, गुवाहाटी के साथ "मात्स्यिकी संवर्धन हेतु एक्वाफीड का प्रयोग" पर दिनांक 10 मई 2019 को असम के दारांगीरी, गोआलपाड़ा जिला में एक प्रशिक्षण-सह-जन जागरूकता का आयोजन किया।
- संस्थान ने जनजाति उप योजना के तहत दिनांक 11 मई 2019 को मंजुडेरगाँव, मिरिक, दार्जिलिंग में एक जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया।
- संस्थान में दिनांक 12 मई 2019 को "पर्वतीय क्षेत्रों में मात्स्यिकी विकास" पर मिरिक, दार्जिलिंग में एक विचार मंथन सत्र का आयोजन किया।
- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने दिनांक 13 मई 2019 को ए.आर.आई.ए.एस. सोसाइटी, गुवाहाटी के साथ बैठक में भाग लिया तथा जी. आई. एफ. टी. परामर्शी परियोजना के अंतर्गत एक रिपोर्ट को प्रस्तुत किया।
- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने दिनांक 15 मई 2019 को ए.आर.आई.ए.एस. सोसाइटी, गुवाहाटी में जी. आई. एफ. टी. परामर्शी परियोजना के हितधारकों के साथ बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, बेंगलुरु ने दिनांक 13 मई 2019 को चेन्नई, तमिलनाडु में मात्स्यिकी विभाग, तमिलनाडु के साथ दूसरी संचालक समिति की बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, बेंगलुरु ने दिनांक 21 मई 2019 को राष्ट्रीय पशु पोषण एवं शरीर क्रिया विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु में "मवेशी आहार, चारा उत्पादन और प्रबंधन के लिए उत्तम प्रणाली की पहचान" पर बैठक में भाग लिया।
- संस्थान और इन्दिरा गांधी जल शोधन प्लांट की संयुक्त बैठक में दिनांक 25 अप्रैल 2019 को "पाल्ता जल शोधन संयंत्र के फिल्टर में अवरोध" पर विचार विमर्श किया गया।

अन्य कार्यकलाप

- संस्थान ने दिनांक 9 मई 2019 को तेलंगाना के पलार जलाशय के हीतधारक बैठक में भाग लिया जिसमें मात्स्यिकी विभाग, तेलंगाना सरकार के अधिकारी और पिंजरा पालन से युक्त 30 मछुआरों ने भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 8-10 मई 2019 को ओड़ीशा के फनी चक्रवात प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया तथा उन्हें राहत सामग्री पहुंचाई। इस दौरान बालुगाँव और सलिया बांध में लगाए गए पिंजरों में हुई क्षति का आंकलन भी किया गया।
- संस्थान में दिनांक 7-13 मई 2019 को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा प्रायोजित स्नातक (कृषि) के छात्र-छात्राओं के लिए “अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन” पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- दिनांक 15-18 मई 2019 को टोंस नदी में ऊंचाई वाले क्षेत्रों में मछलियों के प्रजनन चक्र संबंधी विषय पर अध्ययन किया गया।
- नमामि गंगे परियोजना के तहत संचयन के लिए संस्थान ने दिनांक 15-18 मई 2019 को गंगा नदी के कोलाघाट, फरका और गोदाखली का सर्वेक्षण किया जिससे इस क्षेत्रों में हिल्सा मछली की उपलब्धता को जाना जा सके।
- अनुसूचित जाति उप योजना के तहत दिनांक 8-9 मई 2019 को संस्थान के अध्ययन दल ने कुमली, पंचिता, बेलेडांगा और चमारदाहा आर्द्रक्षेत्रों का सर्वेक्षण किया। इसी कड़ी में दिनांक 16 मई 2019 को कुमली और पंचिता आर्द्रक्षेत्रों के ‘प्राइमरी फिशरमेन कोओपरेटिव सोसाइटी’ के सदस्यों और संस्थान के वैज्ञानिकों के बीच परस्परिक बैठक की गयी।

सेवानिवृत्ति



श्री लाडू राम महावर, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी की सेवानिवृत्ति 31 मई, 2019 को हुई। श्री महावर के बहाली दिनांक 4 अक्टूबर 1989 को टी - 4 के पद पर हुई थी और 1 जनवरी, 1995 को टी - 5 के पद पर पदोन्नति हुई। टी - 6 के



पद पर जनवरी 2005 को हुई। वर्तमान पद श्री महावर जी को 1 जनवरी, 2010 को प्राप्त हुआ था। श्री महावर जी इस संस्थान में 29 वर्ष 7 माह और 28 दिन तक कार्यरत रहे। सिफरी मनोरंजन क्लब ने इस अवसर पर एक समारोह का आयोजन किया गया था और इस कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक एवं सिफरी मनोरंजन क्लब के अध्यक्ष डॉ. बि. के. दास ने की। इस अवसर पर संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने श्री महावर जी के साथ किये गये कार्यों तथा अपने अनुभवों को साझा किया। इस अवसर पर मात्स्यिकी संसाधन एवं पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग के विभागाध्यक्ष डा. विमल प्रसन्ना मोहंती ने श्री महावर जी के कर्मठता के बारे में बताया। निदेशक महोदय ने कहा कि नए तकनीकी अधिकारियों को श्री महावर जी से सीख लेनी चाहिये कि किस तरह लग्न तथा इमानदारी से कार्य किया जा सकता है। निदेशक महोदय ने श्री महावर जी से कहा कि सेवानिवृत्ति के पश्चात भी संस्थान के सभी लोग आपके परिवार के सदस्य हैं और जब चाहे आप यहाँ आ सकते हैं। सभा के अंत में डा. रोहन कुमार रमण ने सभागार में उपस्थित सभी सिफरी परिवार के सदस्यों को सभा में आने के लिए धन्यवाद दिया।

सम्पादक मंडल की तरफ से

इस वर्ष के नवें अंक की प्रस्तुति करते हुए अत्यंत हर्ष कि अनुभूति हो रही है। इस मासिक पत्रिका के माध्यम से संस्थान में हो रहे विभिन्न कार्यों कलापों और भावी योजनाओं की कुछ झलकियों को चित्रों और सम्पादक द्वारा दर्शाने का प्रयास किया गया है।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मोर्य, गणेश चंद्र, राजीव लाल, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कासिम फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91 फैक्स: +91-33-25920388 ई-मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN0970-616X

सिफरी मासिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुनः उत्पन्न नहीं की जा सकती है